HISTORY, B.A. Hons. II - PAPER II

FOREIGN POLICY OF NAPOLEON III (नेपोलियन III की विदेश नीति)

फ्रांस को एक प्रभुत्व सम्पन्न राष्ट्र के रूप में देखने की नेपोलियन III की बलवती इच्छा किसी सुनिश्चित योजना के अभाव में मात्र कल्पना तक ही सीमित रह गयी। फ्रांस की स्थिति को सुदृढ़ करने हेतु युद्ध अपरिहार्य था, परन्तु युद्ध से उत्पन्न संकट से भी वह अनभिज्ञ नहीं था। स्थिति की जटिलता ने उसे अधिक कल्पनाशील तथा अस्थायी निर्णय वाला बना दिया। अस्थिर विचारों पर आधारित उसकी विदेश नीति का विवरण निम्नलिखित है :-

(1) पोप की सहायता :- कैथोलिकों की संतुष्टि हेतु नेपोलियन तृतीय ने राष्ट्रपति के रूप में सर्वप्रथम मेजिनी के रोमन ~~साम्राज्य~~ गणराज्य को पलटकर पोप को पुनः सिंहासनासीन कर दिया।

(2) क्रीमिया युद्ध एवं नेपोलियन तृतीय :- अपनी आन्तरिक स्थिति को सुदृढ़ करने के पश्चात् नेपोलियन III ने कैथोलिकों को प्रसन्न करने एवं फ्रांस की प्रतिष्ठा में वृद्धि करने के उद्देश्य से तुर्की साम्राज्य के अन्तर्गत फेलेस्टाइन में स्थित ईसाइयों के पवित्र स्थानों का प्रश्न उठाया। रूस इन प्रदेशों पर अपना संरक्षण मानता था। संरक्षण के प्रश्न को लेकर क्रीमिया का युद्ध हुआ। दो वर्ष तक चले इस युद्ध में 5 लाख से अधिक व्यक्तियों की मृत्यु तथा अपार धन नष्ट हुआ। इंगलैण्ड के सहयोग से फ्रांस ने इस युद्ध में रूस को पराजित किया और अंत में नेपोलियन III की अध्यक्षता में 1856 ई. में पेरिस में संधि हुई। नेपोलियन III की इस सफलता से चर्च संतुष्ट हो गया।

(3) इटली में नेपोलियन का पुनः हस्तक्षेप और प्लॉम्बियर्स की संधि :- इटली में हो रहे आन्दोलनों में निरन्तर वृद्धि के फलस्वरूप वहां के राष्ट्रवादी नेताओं ने कुशल राजनीति का परिचय देते हुए क्रीमिया युद्ध में फ्रांस को सहायता देकर पेरिस सम्मेलन का आमन्त्रण हस्तगत कर लिया। पेरिस सम्मेलन में इटली के नेता कैवूर ने इटली की कठिनाइयों से सभी सहयोगी देशों को अवगत कराया। इसी क्रम में इटली के राजा विक्टर एमानुएल प्रथम की लड़की का विवाह नेपोलियन III के भाई जेरोम के साथ सम्पन्न हुआ। जुलाई 1858 ई. में नेपोलियन III ने प्लॉम्बियर्स नामक स्थान पर कैवूर से एक समझौता किया। समझौते के अनुसार, "नेपोलियन ने सेवाय तथा नाइस के बदले में लोम्बार्डी तथा वेनेशिया से आस्ट्रिया को निकालने में तथा उत्तरी इटली में एक स्वतंत्र राज्य स्थापित करने में सार्डीनिया की सहायता करने का वचन दिया।"

(4) आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध में इटली की सहायता :- नेपोलियन III की सहायता के प्रति आश्वस्त होकर सार्डीनिया ने 1859 ई. में आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध आरम्भ कर दिया। समझौते के अनुसार नेपोलियन III ने फ्रांस की सेना को सार्डीनिया की सेना के साथ लोम्बार्डी में प्रवेश की आज्ञा दी और मिलान पर सार्डीनिया का अधिकार हो गया।

Ajanta Products Officer

(5) नेपोलियन द्वारा विश्वासघात और आस्ट्रिया के साथ विलाफ्रैंका की संधि:-

इस सफलता से इटली में राष्ट्रीयता की भावना को जहाँ एक और सम्बल मिला, वहीं दूसरी ओर नेपोलियन III ने प्लाम्बियर्स के समझौते की उपेक्षा करते हुए आस्ट्रिया के साथ विलाफ्रैंका की संधि कर ली और युद्ध के प्रति तटस्थ हो गया। इस संधि की पुष्टि ज्युरिच की संधि से हुई। फलतः वेनेशिया पर आस्ट्रिया का अधिकार मान लिया गया। यह निश्चित किया गया कि इटली के समस्त राज्यों को मिलाकर एक संघ बनाया जायेगा जिसका अध्यक्ष पोप होगा। आस्ट्रिया की सेना को लोम्बार्डी खाली करना पड़ा। परिणामस्वरूप परमा मोडेना एवं टस्कनी की जनता ने विद्रोह कर अपने-अपने राजाओं को देश से निकाल दिया। इन प्रदेशों ने सार्डीनिया पीडमाण्ट के साथ संगठित होने की योजना स्वीकार की। ट्यूरिन की संधि के अनुसार नेपोलियन ने नाइस व सेवाय पर अधिकार कर लिया तथा पीडमाण्ट द्वारा टस्कनी, परमा मोडिया एवं लोम्बार्डी को मिला लेने को मान्यता प्रदान की।

विलाफ्रैंका की संधि की पुष्टि में की गई संधियों के सन्दर्भ में तथा इटली के साथ विश्वासघात को लेकर नेपोलियन III की कटु आलोचना की गई। नेपोलियन के इस कार्य से उसकी प्रतिष्ठा को भारी धक्का लगा तथा इटली से फ्रांस के सम्बंध में खराब हो गए।

(6) पोल के लोगों का विद्रोह:- रूस द्वारा पोलैण्ड की स्वतंत्रता का विरोध तथा 1803 ई. की इटली की घटनाएं रूस के विरुद्ध पोलैण्ड की जनता के विद्रोह का कारण बनी। रूस द्वारा दो हजार पोलस की गिरफ्तारी से विद्रोह में और वृद्धि हुई। नेपोलियन ने सहायता का आश्वासन देकर भी इस संकट के अवसर पर पोलैण्ड की कोई सहायता नहीं की। अतः पोलिश जनता नेपोलियन III के विरुद्ध हो गई। रूसी सम्राट एलेक्जेंडर द्वितीय ने बिस्मार्क के सहयोग से पोलिश विद्रोह का दमन कर दिया।

(7) मैक्सिको की दुर्घटना:- मैक्सिको गणराज्य में उभरे हुए अन्तर्कलह से उत्पन्न संघर्ष में गणतंत्रवादियों को सफलता मिली और उनका नेता बेनियो ज्वारेज राष्ट्रपति बनाया गया। उसने इंगलैण्ड, फ्रांस तथा स्पेन को देय ऋणों की पूर्ति अस्वीकार कर दी। अमेरिका में आरम्भ गृह युद्ध का लाभ उठाकर नेपोलियन III ने मैक्सिको की गणतंत्रवादी सरकार को मान्यता न देकर अपने उम्मीदवार मैक्सीमिलियन को राजा बनाना चाहा। वह आस्ट्रिया के सम्राट जोसेफ का भाई तथा बेल्जियम के सम्राट लियोपोल्ड का दामाद था। नेपोलियन के अनुरोध पर फ्रांस, इंगलैण्ड तथा स्पेन की संयुक्त सेनाओं ने जनवरी 1862 ई. में मैक्सिको पर आक्रमण किया। मैक्सिको के राष्ट्रपति ज्वारेज ने ऋण की अदायगी करना स्वीकार कर लिया। इंगलैण्ड तथा स्पेन की सेनाओं के वापस आ जाने के पश्चात् भी नेपोलियन वहीं डटा रहा। अंत में मैक्समिलियन को सिंहासनासीन कर दिया, परन्तु यह स्थायी सिद्ध न हुआ। 1865 ई. में ज्वारेज ने अवसर पाकर पुनः विद्रोह किया। इसी समय अमेरिकी गृह युद्ध भी समाप्त हो गया। अतः वहां की सरकार ने मुनरो सिद्धांत का सन्दर्भ देते हुए फ्रैंच सेना का विरोध किया। तदनुसार नेपोलियन को अप्रतिष्ठित होकर सेना वापस

हटाना पड़ी और आस्ट्रिया तथा बेल्जियम के समर्थकों का कोपभाजन बनना पड़ा।

(8) स्लेजविग - होल्सटीन का प्रश्न और नेपोलियन III :- बिस्मार्क प्रशा के एकीकरण के लिए स्लेजविग तथा होल्सटीन के प्रदेशों पर आधिपत्य चाहता था। डेनमार्क की दृष्टि भी इन प्रदेशों पर स्थिर थी। इंग्लैण्ड का प्रशा से विरोध होने के कारण उसने फ्रांस तथा रूस से इस सम्बन्ध में सहायता की अभिलाषा प्रकट की। इंग्लैण्ड की अभिलाषा थी कि उक्त तीनों देशों के मतों की उपेक्षा करने पर समन्वित होकर प्रशा पर आक्रमण करना चाहिये। रूस पोलैण्ड के प्रश्न पर तटस्थ रहा। मैक्सिको की दुर्घटना से शक्ति का ह्रास हो जाने के कारण नेपोलियन III ने भी युद्ध के प्रति तटस्थ रहने में ही अपनी रुचि दिखाई। अवसर का लाभ उठाकर बिस्मार्क ने नेपोलियन III की सम्मति की उपेक्षा करते हुए इन प्रदेशों का विलय अपने राज्य में कर लिया।

(9) सेडेवा का युद्ध :- जर्मनों के एकीकरण के लिए प्रशा का आस्ट्रिया से युद्ध आवश्यक था। अतः 1865 ई. में बिस्मार्क ने आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध की कूटनीतिक तैयारी शुरू कर दी। रूस के आस्ट्रिया से पूर्व के ही विरोध होने तथा इंग्लैण्ड के आन्तरिक समस्याओं में उलझने के कारण मात्र फ्रांस ही ऐसा देश था जिससे आस्ट्रिया को सहायता की आशा की जा सकती थी। अतः बिस्मार्क ने मैत्री स्थापित करने हेतु फ्रांस से गुप्त वार्ता की, जिसके अनुसार नेपोलियन III ने आस्ट्रिया व प्रशा के मध्य युद्ध में तटस्थ रहने का वादा किया। फ्रांस की तटस्थता के मूल्य के रूप में बिस्मार्क ने थोड़ा सा सीमान्त प्रदेश देने का वादा किया, बशर्ते कि उससे प्रशा को कोई नुकसान न हो।

इस प्रकार बिस्मार्क ने आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की। सात सप्ताह तक चले सेडेवा के युद्ध में आस्ट्रिया की बुरी हार से फ्रांसीसी जनता एवं नेपोलियन III को काफी आश्चर्य हुआ। नेपोलियन III की योजना थी कि दोनों शक्तियाँ दीर्घकालीन युद्ध से थक हार कर दोनों में से कोई उससे सहायता की याचना करेगा। परन्तु ऐसा कुछ नहीं हुआ। इसके विपरीत यदि फ्रांस खुलकर आस्ट्रिया की मदद करता तो न आस्ट्रिया पराजित होता और न ही फ्रांस की सीमा पर प्रशा जैसे शक्तिशाली राष्ट्र का उदय होता।

(10) बिस्मार्क की कूटनीति और फ्रैंको प्रशियन युद्ध 1870 :- आस्ट्रिया की पराजय से प्रशा की शक्ति में वृद्धि हो गई। इससे फ्रांस में नेपोलियन III के प्रति असंतोष बहुत बढ़ गया। नेपोलियन के प्रति फ्रांस की जनता के बढ़ते हुए असंतोष को समाप्त करने का मात्र एक ही उपाय था - प्रशा के विरुद्ध युद्ध की घोषणा। स्पेन का उत्तराधिकार के प्रश्न का बहाना लेकर जुलाई 1870 ई. को फ्रांस ने प्रशा के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इस युद्ध में नेपोलियन III को 85 हजार सैनिकों सहित आत्मसमर्पण करना पड़ा। नेपोलियन III की पराजय का समाचार पेरिस पहुँचते ही फ्रांस में तृतीय गणतंत्र की घोषणा कर दी गई। युद्ध के अंत तक नेपोलियन III कैद रहा और युद्ध की समाप्ति पर वह मुक्त होकर इंग्लैण्ड चला गया जहाँ 1873 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

इस प्रकार नेपोलियन III की विदेश नीति असफल कही जा सकती है।

29.9.2020